बात सुन्दर बाई और है, और उनकी और रवेस।
गत मत उनकी और है, हम लिया सब उनका भेस।। २३ ।।

सुन्दरबाई जिनके अन्दर श्री राजजी महाराज विराजमान हैं, की रहनी और बुद्धि दुनियां से अलग परमधाम की है। अब मेरे अन्दर धनी श्री देवचन्द्रजी विराजमान हो गए हैं। हमने उनके दिखाए परमधाम के रास्ते को ही ग्रहण किया है।

मोहे सिखापन उनकी, दे फुरमान करी रोसन।
इन्द्रावती तो केहेवहीं, जो दोउ बिध करी चेतन।। २४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहते हैं कि श्री देवचन्द्रजी ने तन छोड़ने से पहले ही मुझे सब कुरान और भागवत की हकीकत समझाई। मुझे सांसारिक तथा परमधाम की होने वाली लीला की सुध देकर सावचेत (सावधान) कर दिया।

॥ प्रकरण ॥ ६३ ॥ चौपाई ॥ ७६२ ॥

राग श्री

तमें वाणी विचारी न चाल्या रे वैष्णवो, तमें वाणी विचारी न चाल्यो।
अखर एकनो अर्थ न लाध्यो, मद मस्त थईने हाल्यो।। १ ।।

हे वैष्णवो! तुम वल्लभाचार्यजी की वाणी का विचार करके नहीं चलते हो। तुमने उनकी वाणी के रहस्य के एक शब्द का भी अर्थ नहीं समझा और माया के नशे में चूर होकर चल रहे हो।

सत वाणी वैष्णव ने समझावूं, जेसूं मूल डाल प्रकासी।
श्री मुख आचारज जे ओचरया, तेणे जाए भरमना नासी।। २ ।।

हे वैष्णवो! आओ मैं तुम्हें सतवाणी समझाऊं, जहां से संसार की उत्पत्ति हुई है। श्री वल्लभाचार्यजी ने जो कहा है, उससे सब संशय मिट जाते हैं।

वैष्णव वाणी जो जो विचारी, ए भोम देखी पामो त्रास।
चौद भवनथीं ए वाणी न्यारी, तेमां पेर पेरना प्रकास।। ३ ।।

हे वैष्णवो! यदि तुम इस वाणी को विचार करके देखोगे तो इस संसार को देखकर हैरान हो जाओगे। वल्लभाचार्यजी की वाणी चौदह लोकों से अलग है। इसमें तरह-तरह का ज्ञान दिया है।

प्रथम मोह तत्व नी उतपन, ते माहें थी तत्व पांचे।
ए पांच तत्व थकी चौद लोक प्रगट्या, एमा वैष्णव होय ते न राचे।। ४ ।।

सबसे पहले मोह तत्व की उत्पत्ति हुई और उसमें से पांच तत्व पैदा हुए। पांच तत्व से चौदह लोक बने। जो वैष्णव होते हैं वह इस झूठे संसार में मग्न नहीं होते।

एमा प्रेमे पारब्रह्म पांमिए, ए वाणी बोले रे एम।
अनेक कसोटी आवे जो आड़ी, तो ए निध मूकिए केम।। ५ ।।

वल्लभाचार्यजी की वाणी इस प्रकार कहती है कि प्रेम से ही पारब्रह्म मिलता है, इसलिए लाख संकट आने पर भी प्रेम मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए।

वैष्णवो सत व्स्त एक देखाडयूं, बीजो कह्यो सर्वे नास।
महाप्रले मां तत्व लेवासे, आंहीं मुझ थकी अजवास।। ६ ।।

हे वैष्णवो! तुमको मैं अखण्ड न्यामत की पहचान कराती हूं जिसके बिना दूसरा सब नाशवान है। यहां प्रलय में पांचों तत्व भी मिट जाएंगे। उस अखण्ड का ज्ञान जो नाशवान नहीं है, मुझसे लो।

Nijanand App

वैष्णवो मोह थकी निध न्यारी दीधी, आपण ने अविनास।
नाम तत्व कहूं श्री कृष्ण जी, जे रमे अखंड लीला रास।। ७ ।।

हे वैष्णवो! मोह तत्व से वह अखण्ड न्यामत अलग है जो कि हमको मिली है। इस अखण्ड तत्व का नाम श्री कृष्ण है जो अखण्ड रास लीला खेल रहे हैं।

एहने सरणे सोप्या वैष्णवने, जिहां बिध बिध ना विलास।
हवे नेहेचल रंग कीजे ते पुरुख सों, दई प्रेमनो पास।। ८ ।।

वल्लभाचार्यजी ने वैष्णवों को इन श्री कृष्णजी की शरण में जाने को कहा है। जहां तरह-तरह से विलास की लीला हो रही है। अब उस अखण्ड श्री कृष्णजी से प्रेम के द्वारा अखण्ड आनन्द प्राप्त करें।

पुरुखपणें ए दृष्टें न आवे, ए अबलापणें लीजे अंग।
पुरुख नथी ए विना कोई बीजो, जे रमे नेहेचल लीला रंग।। ९ ।।

इन श्री कृष्ण का दर्शन पुरुष भाव से नहीं मिलता। सखी भाव से मिलता है। इनके बिना और कोई दूसरा पुरुष नहीं है जो अखण्ड लीला खेल रहा हो।

ए प्रीछो तो पारब्रह्म चित आवे, समझे सुपन परूं थाय।
अखंड तणां सुख एणी पेरे लीजे, लाहो मायामां लेवाय।। १० ।।

इनकी पहचान कर लो तो फिर पारब्रह्म का ध्यान आएगा और सपना छूट जाएगा। माया के अन्दर रहकर इस तरह से अखण्ड सुख प्राप्त करें।

सत वस्त घणूं स्या ने प्रकासूं, अर्थी बिना नव कहिये।
एहेना नेहेचल नेहड़ा गोप भला, आ उलटीमां प्रगट न थैये।। ११ ।।

वह सत वस्तु (पारब्रह्म का ज्ञान) किसको दूं? कोई लेने वाला पात्र नहीं है। इनका अखण्ड प्रेम छिपा है जो झूठी माया में जाहिर नहीं करना चाहिए।

अर्थी होय ते आवी ने पूछे, मोटी मत तेहेने दाखूं।
ए निध देवा जोग नहीं, तेथीं अंतर राखूं।। १२ ।।

जो कोई इसका पात्र होगा वह आकर पूछेगा, तो मैं उसे अखण्ड पारब्रह्म का ज्ञान बताऊंगी। दूसरा कोई इसको लेने योग्य नहीं है, इसलिए उसे छिपा कर रखा है।

गुण मुख बोली भलूं न मनावूं, अवगुण न राखूं छानो।
सत वस्त देवाने सत भाखूं, एमा दुख मानो ते मानो।। १३ ।।

किसी का गुण गाना मैं अच्छा नहीं समझती और अवगुण को मैं छिपाती नहीं हूं। सत (पारब्रह्म) का ज्ञान देने के वास्ते ही सत बोलती हूं। इस वास्ते किसी को दुःख होता है तो हुआ करे।

पतलीने तमें पगला भरिया, लाग्यो स्वाद संसार।
पुरुखपणे रमया माया मां, तो आड़ी आवी अंधार।। १४ ।।

तुम संसार के स्वाद में लगकर वेश्या जैसी चाल चल रहे हो। इस संसार में अपने को पुरुष समझ रहे हो, इसलिए माया तुम्हारे आड़े आ रही है।

जोयूं नहीं तमें जागीने, अमृत ढोली ने विख पीधूं।
असत मंडल ने सतकरी समझया, अखंड ने वांसो दीधूं।। १५ ।।

तुमने सावचेत (सावधान) होकर पहचाना नहीं और अमृत को गिराकर विष पी लिया। झूठे ब्रह्माण्ड को सच्चा समझ बैठे हो और अखण्ड धाम को छोड़ बैठे हो।

Nijanand App

अंध थके तमें ए निध खोई, जे तमने सत स्वामिऐं दीधी।
कठण वचन तो कहूं छूं तमने, जो तमें दुष्टाई कीधी।। १६ ।।

तुमने वल्लभाचार्यजी की दी हुई निधि को अन्धे बनकर गंवा दिया। तुमने ऐसी दुष्टता की है, इसलिए मैं तुमको कठिन शब्द कहती हूं।

नहीं तो करूं कटका जे जिभ्या वदे वांकू, पणतमें लछणें आप एम कहावो।
जे स्वामी अविचल सुख आपे, तेहने तमें कां निंदावो।।१७।।

नहीं तो ऐसी जबान जो किसी को कठोर शब्द कहे, मैं उसके टुकड़े कर दूं, परन्तु अपनी रहनी से ही ऐसा कहलवाते हो, जो वल्लभाचार्य स्वामी अखण्ड तत्व का ज्ञान देते हैं तुम उनकी निन्दा क्यों करवाते हो?

ओलख्या नहीं तमें आचारज जी ने, तो भरम माहें भमया।
वैष्णव सकलने तमें वांकू कहावो, तो तमें नीचा नमया।। १८ ।।

तुमने वल्लभाचार्यजी को पहचाना नहीं और माया में भूल गए, इसलिए हे वैष्णवो! तुम्हारी उलटी चाल ने ही वैष्णव धर्म को झुकाया है।

पतिव्रता नारी ते पति ने पूजे, सेवे ते अनेक पेरे।
पिउ पर वचन सुणे जो वांकू, तो देह त्याग तिहां करे।। १९ ।।

पतिव्रता स्त्री पति की अनेक प्रकार से सेवा करती है। उसको यदि कोई पति के लिए गलत शब्द कह दे तो वह तुरन्त अपने तन को त्याग देती है।

तमें वांकू विसमूं कांई नव जोयूं, जेम भामनी भूंडी भंडावे।
कुकरम करतां कांई न विचारे, पछे नाहो ने नीचू जोवरावे।। २० ।।

जिस तरह से दुष्टा स्त्री अपने पति को बदनाम करती है, उसी प्रकार तुमने उलटा रास्ता पकड़ते समय कुछ विचार नहीं किया। ऐसी दुष्टा स्त्री नीच कर्म करते समय कुछ नहीं विचारती। वही स्त्री पीछे पति को कलंक लगवाती है।

एणी पेरे सेव्या तमें स्वामीने, चितसूं जुओ विचारी।
दुष्टपणें तमें धणी ने दुखवया, हवे केही पेर थासे तमारी।। २१ ।।

आप जरा चित्त से विचार कर देखो तो तुमने भी ऐसी दुष्टा स्त्री की तरह अपने इष्ट श्री कृष्णजी की सेवा की है। तुम्हारी इस दुष्टता ने तुम्हारे धनी को दुःखी किया है, तो अब तुम्हारा क्या हाल होगा?

सत कहे संतोख उपजे, कुली तणे कांधे चढ़या।
ते वैष्णव नहीं तेथी रहिए वेगला, जे ए निध मूकी पाछा पडया।। २२ ।।

संसार की परवाह न करके माया की चाहना (मान मर्यादा) को ठोकर मारकर जिसको श्री कृष्णजी को मानने में सन्तोष होता है वही वैष्णव है। जो इससे उलटा चलता है वह वैष्णव नहीं है। उससे अलग रहो।

केहेतां सवलूं आंणे चित अवलूं, वस्त विना करे विवाद।
महामत कहे तेहने केम मलिए, जे करे अवला उदमाद।। २३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि सीधा कहने में जो उलटा समझते हैं, बिना आधार के विवाद करते हैं (झगड़ते हैं) और उलटा पागलपन दिखाते हैं, उनको हम क्या समझाएं?

।। प्रकरण ।। ६४ ।। चौपाई ।। ७८५ ।।

Nijanand App